साहित्य अकादेमी

हिमाचल तथा पंजाब गोर्खा एसोसिएशन

28 फ़रवरी, 2006

लेखक से भेंट

मगन पथिक

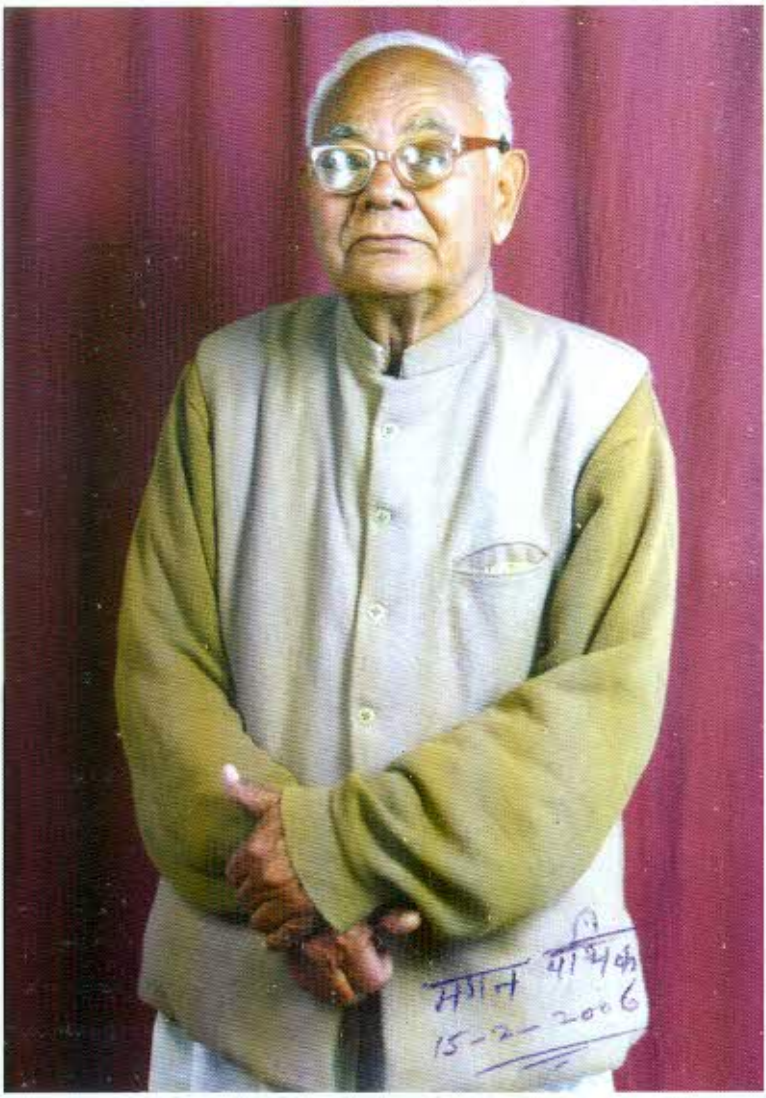

गुरु गोरखनाथ मन्दिर दाड़ी (धर्मशाला)
में मगन पथिक (जनवरी 1986)

"मेरे उद्देश्यों में एक प्रमुख बात यह थी कि तत्कालीन परिस्थितियों और परिवेश में नेपाली संस्कृति की प्रायः नगण्य चर्चा को गंभीरता से लेते हुए मैं समाज सेवा के साथ-साथ नेपाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं विकास हेतु पथिक की भाँति घूमा करता था; सो मैंने 'पथिक' उपनाम अपनाया।"

नेपाली भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रति इतना समर्पित भाव रखनेवाले मगन सिंह गुरुंग ने जब 1950 में अपना साहित्यिक उपनाम 'पथिक' रखा, तो यह विशेषतया द्रष्टव्य है कि मातृभाषा नेपाली में शिक्षा प्राप्त करना तो दूर, बाध्यतावश इन्हें प्राथमिक से उच्च माध्यमिक तक की पढ़ाई हिन्दी में भी नहीं, वरन् उर्दू में पूरी करनी पड़ी। नेपाली भाषा में शिक्षार्जन न कर पाने के मलाल ने इन्हें वर्षों तक सताया।

लेकिन अध्यवसाय के धनी मगन पथिक ने स्वाध्याय से नेपाली भाषा में न केवल दक्षता प्राप्त की, वरन् लेखन-कार्य भी शुरू किया। कॉलेज में अंग्रेज़ी, हिन्दी और संस्कृत का अध्ययन इन्होंने सहायक विषयों के रूप में किया। इन भाषाओं के अतिरिक्त ये हिमाचल प्रदेश की स्थानीय बोली 'गद्दी' बखूबी बोलते ही नहीं, पढ़ते और लिखते भी हैं।

मगन पथिक का जन्म 2 जनवरी 1927 को धर्मशाला छावनी, ज़िला कांगड़ा में एक निम्न-मध्यवर्गीय परिवार में हुआ। पिता श्री कालू राम गुरुंग (सेवानिवृत्त सैनिक) बड़े ही संवेदनशील स्वभाव के थे तथा माता श्रीमती शिवकला गुरुंग की भगवान शंकर में अटूट आस्था थी।

दर्शनशास्त्र में रुचि के चलते मगन पथिक कॉलेज में दर्शनशास्त्र के विद्यार्थी रहे। इसीलिए इनकी रचनाओं में महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानंद, योगानंद, सत्य साईं बाबा आदि के दर्शन की झलक दिखाई देती है। इनकी कविताओं में मानवतावादी विचारों का प्राधान्य रहता है। स्कूली जीवन से छात्र नेता रहे मगन पथिक छात्रों की समस्याओं का समाधान तथा श्रमिकों को वांछित सुख-सुविधाएँ मुहैया करवाने में हमेशा अग्रणी रहे। इनके नस-नस में वीरता, ईमानदारी, समाजसेवा और देशप्रेम की भावनाएँ समाई हैं!

गोर्खा विद्यार्थी संगठन, धर्मशाला के सचिव पद पर कार्यरत रहते हुए, कुछ छात्र सदस्यों की उचित माँगों के समर्थन में एक पत्रिका प्रकाशित हुई, जिसका गाँव-गाँव घर-घर जाकर वितरण एवं प्रचार-प्रसार हुआ; फलस्वरूप आशातीत सफलता मिली। सन् 1950 में प्रकाशित होनेवाली उस प्रथम पत्रिका का नाम था—'मनोरंजक सूचना पत्रिका' तथा इसके संपादक थे, मगन पथिक, एफ़. ए. (इंटर) छात्र। उसके पश्चात् वर्ष 1953 में उसी संगठन की एक अन्य वार्षिक पत्रिका *उज्यालो* में पथिक की सामाजिक लेखमाला प्रकाशित हुई, जिसमें जाति, समाज और देश के प्रति मास्टर मित्रसेन, शहीद दुर्गामल्ल, शहीद दलबहादुर थापा आदि के अनुपम योगदानों का उल्लेख किया गया।

मेजर धनसिंह थापा द्वारा परमवीरचक्र (1962) प्राप्त करने के पश्चात् सन् 1964 से भाग्सू (धर्मशाला) के स्कूल में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के लिए नेपाली भाषा और साहित्य के अध्ययन की सरकार द्वारा अल्प

नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जीलिङ् के पदाधिकारी-सदस्यों के साथ (अक्तूबर 1993)
बाएँ से (बैठे हुए) डॉ. जगत छेत्री, डॉ. तुलसी अपतन, मगन पथिक, डॉ. लक्खीदेवी सुन्दास, डॉ. इंद्रबहादुर राई, प्रेम प्रधान। (खड़े हुए) सचिन राई, रुकमणी छेत्री, जस योञ्जन 'प्यासी', कर्ण थामी आदि।

व्यवस्था की गई। इसी बीच गोर्खा विद्यार्थी संगठन के पुनः सक्रिय होने पर सन् 1967 में *हिमालको काखमा* नामक पत्रिका का प्रकाशन फिर से आरंभ हुआ, जिसमें मगन पथिक बी.ए., बी.एड. (अध्यापक) द्वारा मास्टर मित्रसेन के संबंध में लिखित चार पृष्ठीय लेख विशेष उल्लेखनीय है। एक समय ये *भाग्सू-वाणी* समाचार पत्रिका के संपादक भी रहे।

वर्ष 1979 में नेपाली भाषा में साहित्य अकादेमी के प्रथम पुरस्कार विजेता एवं अखिल भारतीय नेपाली भाषा समिति के तत्कालीन अध्यक्ष प्रो. इंद्रबहादुर राई ने धर्मशाला की अपनी यात्रा के दौरान मगन पथिक से समाज हित में पुनः क़लम उठाने का आग्रह किया। तब से पथिक ने अपनी ओजस्विनी क़लम को शनैः-शनैः ही सही, लेकिन निरंतर गतिमान रखा। 'जन्मभूमि भाग्सू एक सानो परिचय' शीर्षक के अंतर्गत पथिक द्वारा लगभग 3000 शब्दों में रचित लेख जुलाई 1983 में *भाग्सू पत्रिका, हिमालचुली* पत्रिका विराटनगर, *स्मारिका* (नेपाली सम्मेलन, दिल्ली), *बिन्दू* पत्रिका (असम-1987) तथा *हिमालयन टुडे* (1992) में प्रकाशित हुआ। स्थानीय उर्दू पत्रिका *कैलाश* में अगस्त 1983 से अगस्त 1985 के दौरान पथिक द्वारा उर्दू में लिखे गए लेखों के अंतर्गत— शहीद दुर्गामल्ल, शहीद दलबहादुर थापा, कैप्टन रामसिंह ठाकुर, मास्टर मित्रसेन, कैप्टन बहादुर सिंह बराल, मेजर-जरनल ओंकार सिंह भंडारी, महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाषचंद्र बोस तथा स्वामी रामकृष्ण परमहंस प्रकाशित हुए।

वर्ष 1985 से लेकर 1999 तक के बीच मगन पथिक द्वारा रचित एवं प्रकाशित पुस्तकों में गीत-कविता के संकलन *श्रद्धा को फूल* (जनवरी 1985) तथा *जीवन साधना* (जुलाई 1985) हैं।

1987 में मगन पथिक की एक अन्य पुस्तक *ठाकुर चंदन सिंह* प्रकाशित हुई। यह पुस्तक युगपुरुष स्वातंत्र्य-सेनानी और प्रखर पत्रकार ठाकुर चंदन सिंह की जन्मशती के अवसर पर उनके व्यक्तित्व, कृतित्व और विशिष्ट योगदानों को रेखांकित करने का सफल प्रयत्न है।

साहित्य अकादेमी द्वारा 'भारतीय साहित्य के निर्माता' शृंखला के अंतर्गत मगन पथिक द्वारा लिखित मास्टर मित्रसेन थापा (1895-1946) की बहुआयामी

भानु-स्मृति पुरस्कार प्राप्ति के अवसर पर धर्मशाला में नेपाली परिषद, देहरादून के प्रतिनिधियों के साथ, (बाएँ से) सर्वश्री भूपेन्द्र अधिकारी, मगन पथिक, बी.बी. राना, सूरज राई, सरला शर्मा, संस्थाध्यक्ष कै. प्यार सिंह थापा और ले. कर्नल एस.एन.एस. गुरुंग

प्रतिभा और कृतित्व से परिचय करानेवाली *मित्रसेन* नामक पुस्तक क्रमशः 1989 (नेपाली) तथा 1992 (हिन्दी अनुवाद) में प्रकाशित होने के फलस्वरूप मित्रसेन के सम्मान में नेपाल सरकार द्वारा 20 नवंबर 1999 में तथा भारत सरकार द्वारा 9 अक्तूबर 2001 को 'डाक टिकट' जारी किया गया। साथ ही सिक्किम साहित्य परिषद ने भी मित्रसेन के नाम पर वर्ष 1992 से 50,000 रुपये का 'मित्रसेन स्मृति पुरस्कार' देना शुरू किया। हिमाचल प्रदेश सरकार ने भी मित्रसेन के उत्कृष्ट योगदानों को देखते हुए वर्ष 2002 में 'मित्रसेन स्मृति संग्रहालय' की स्थापना उनके घर के समीप की।

मगन पथिक की हिन्दी कृति *आज़ाद हिन्द फ़ौज के ये गोरखा वीर* जनवरी 1991 में प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में आज़ाद हिन्द फ़ौज से संबद्ध पाँच गोर्खा वीरों—दुर्गा मल्ल, दलबहादुर थापा, पूर्ण सिंह ठाकुर, दिलमान सिंह थापा और रामसिंह थापा—का विस्तृत परिचय दिया गया है। इसके अलावा आज़ाद हिन्द फ़ौज के अन्य देशभक्त गोर्खा सैनिकों की सूची भी इस पुस्तक में उपलब्ध कराई गई है।

हाम्रो संस्था को पचत्तरी वर्ष नामक पथिक कृत पुस्तक वर्ष 1991 में प्रकाशित हुई, जिसमें 1916-1991 के दौरान हिमाचल तथा पंजाब गोर्खा एसोसिएशन के संस्थाध्यक्षों एवं कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा निःस्वार्थ भाव से किए गए सेवा-कार्यों का वर्णन तथा भावी पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन ग्रहण करने की प्रेरणा है। जनवरी 1999 में पथिक सृजित *कविता गीत-संग्रह* पुस्तक प्रकाशित हुई। इसमें कुल 72 गीत-कविताओं का समावेश है। उक्त पुस्तक की अंतिम 18 कविताओं में *भगवद्गीता* के 18 अध्यायों का सार संक्षेपण है।

पथिक ने 1983 में *मित्र को डायरी* तथा *केही गीत कविता* एवं 1988 में *मित्रसेन साहित्य—दोस्रो संकलन* का संपादन भी किया। इनके अतिरिक्त अन्य पत्र-पत्रिकाओं में मगन पथिक द्वारा रचित एवं प्रकाशित लेखों में—'नेपाली साहित्य को विकासमा मित्रसेन को योगदान' शीर्षक लेख *ब्रह्मपुत्र*-अंक-2, त्रिभुवन विश्व-विद्यालय काठमांडौ (1996) तथा *हाम्रोध्वनि*, मासिक पत्रिका (गुवाहाटी, असम) 1997 में प्रकाशित हुआ।

मगन पथिक की कविताओं का स्वर जहाँ एक ओर मानवतावादी है, वहीं इनका गद्य लेखन राष्ट्रवादी चेतना से परिपूर्ण और प्रेरक है। पथिक ने हिन्दी, उर्दू और नेपाली में निरंतर लेखन किया है। ख़ासकर हिमाचल प्रदेश में नेपाली भाषा-साहित्य-संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने में इनका जो योगदान है, उसे क़तई भुलाया नहीं जा सकता।

विशिष्ट ग्रंथ-सूची

- *ठाकुर बंदन सिंह* (जीवनी), अक्तूबर 1987 (नेपाली में)
- *मित्रसेन* (विनिबंध) साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित (1989 में नेपाली तथा 1992 में हिन्दी अनुवाद)
- *आज़ाद हिन्द फ़ौज के वे गोरखा वीर*, जनवरी 1991 (हिन्दी में)
- *हाम्रो संस्था को पचत्तरी वर्ष*, अक्तूबर 1991 (नेपाली में)

  प्रकाशक : हिमाचल तथा पंजाब गोर्खा एसोसिएशन, धर्मशाला
- *कविता-गीत संग्रह*, जनवरी 1999 (नेपाली में)

पुरस्कार-सम्मानादि

- 1991 : भानु स्मृति पुरस्कार, देहरादून
- 1992 : श्रेष्ठ साहित्यकार सम्मान, हिमाचल केसरी, धर्मशाला
- 1992 : अभिनंदनस्वरूप प्रशस्ति पत्र, हि.पं. गोर्खा एसोसिएशन, धर्मशाला
- 1995 : स्मृति चिह्न द्वारा सम्मानित, मा. मित्रसेन सा. सं. सभा, धर्मशाला
- 1996 : नेपाल नरेश गद्दी आरोहण रजत जयंती महोत्सव के शुभ उपलक्ष्य में पदक एवं प्रमाण पत्र द्वारा सम्मानित।
- 1999 : विद्या धर्म प्रचारिणी समिति, वाराणसी एवं बालचंद्र ट्रस्ट, काठमांडौ द्वारा पुरस्कृत।

मगन पथिक अपने सुपुत्र
डॉ. राजेन्द्र सिंह गुरुंग के साथ

- 2001 : अरुगि प्रशस्ति पत्र एवं स्मृति चिह्न द्वारा सम्मानित, अरुगि साहित्य संस्था, खरसाङ (दार्जीलिङ)

प्रमुख घटनाएँ

1927 : जन्म

1932 : स्कूल में प्रथम बार प्रवेश

1936 : माता का आकस्मिक निधन, स्कूल जाना बंद, नए गाँव में बस गए

1939-43 : स्कूल में पुनः प्रवेश, पाँचवी कक्षा 1939 तथा मिडिल 1943 में उत्तीर्ण

1943-49 : फ़ौज में हवलदार क्लर्क

1948 : पिता का निधन

1949 : मैट्रिक पास कर स्थानीय कॉलेज में प्रवेश एवं गोर्खा विद्यार्थी संगठन में सक्रिय सहभागिता

1950-51 : जनमुक्ति संग्राम (नेपाल) में शामिल

1951-52 : एफ़.ए. (इंटर) पास तथा कॉलेज में पुनः प्रवेश

1954 : विवाह

1954-62 : विभिन्न स्थानों में नौकरी

1961 : बी.ए. की उपाधि प्राप्त

1962-63 : बी.एड्. परीक्षा उतीर्ण कर राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय

अपनी पत्नी के साथ श्री मगन पथिक और श्री जीवन नामदुंग। साथ में पथिक जी के निकट सहयोगी।

रैत (कांगड़ा) में अध्यापक पद पर नियुक्त

1964-80 : राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, धर्मशाला में स्थानांतरण

1965 : *शहीद दुर्गामल्ल* नाटक का लेखन, निर्देशन एवं मंचन

1966 : राजधानी शिमला में हिमाचल दिवस उत्सव (नया हिमाचल) के अवसर पर गोर्खा नृत्य दल का गठन, निर्देशन एवं मंच-प्रदर्शन

1967 : नेपाल के 5-सरकार महाराज महेन्द्र विक्रम शाहदेव के जन्म दिवस उत्सव पर निमंत्रण पाकर सांस्कृतिक दल सहित काठमांडौ यात्रा।

1967-73 : गवर्नमेण्ट टीचर्स यूनियन के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप में कोठारी ग्रेड प्राप्ति के लिए संघर्ष, अंततः सफलता अर्जित।

1973-80 : भगवान सत्य साईं बाबा के पुट्टपार्ती (आं.प्र.) में दर्शन (1973), सत्य साईं सेवा समिति का गठन (1974) तथा लगभग 5 वर्षों तक सक्रिय सेवार्पण।

1979-1992 : लेखन-कार्य में पुनः सक्रिय। इस बीच चार विशिष्ट पुस्तकों का लेखन-प्रकाशन)

1980-86 : राजकीय उच्च विद्यालय दाड़ी (धर्मशाला) में स्थानांतरण।

1982-89 : मित्रसेन साहित्य संगीत सभा की स्थापना (1982) के पश्चात् आकाशवाणी, रोहतक के ए ग्रेड कलाकार स्व. दयाल सिंह राना के सहयोग से स्थानीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों में युवा कलाकारों का निर्देशन एवं सफल प्रस्तुतीकरण (1986-89 के मध्य)

1986 : सेवानिवृत्त। इसी बीच *श्रद्धा को फूल* तथा *जीवन साधना* काव्य संग्रह को संगीत बद्ध करवा स्थानीय कलाकारों के सहयोग से ऑडियो कैसेट रिकार्डिंग करवाना।

1992-2006 : *भाग्सू-वाणी* पत्रिका के संपादन कार्य में सक्रिय सहयोग।

1993-97 : सदस्य, नेपाली परामर्श मंडल, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

1993 : 69 दिनों तक जम्मू, कोलकाता, दक्षिणेश्वर, गांतोक, गेज़िङ, दार्जीलिङ, खरसाङ, कालिम्पोङ, सिलीगुड़ी, डूअर्स, गुवाहाटी, लमडिंग, शिलाङ, राँची, दिल्ली, देहरादून, मसूरी तथा ऋषिकेश आदि स्थानों की सांस्कृतिक यात्रा।

1996-2006 : उच्च रक्तचाप-मधुमेह (1996 से) तथा आंशिक पक्षाघात (दाहिना अंग) (1999 से) से ग्रस्त हो उपचाराधीन।